सांख्यदर्शन के तत्त्वों की लोकोपयोगिता

डा० भुवनेश्वरी भारद्वाज

असिस्टेण्ट प्रोफेसर

संस्कृतविभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय

लखनऊ–226025

सांख्यदर्शन में स्वीकृत तत्त्वों की संख्या–25

1. प्रकृति (प्रधान)

2. पुरुष (आत्मा)

महत् (बुद्धि)

अहङ्कार

पञ्चतन्मात्र

इन्द्रियगण

(शब्द,स्पर्श,रूप,रस,गन्धतन्मात्र)

एकादश

(मनस्, ज्ञानेन्द्रिय–5,कर्मेन्द्रिय–5)

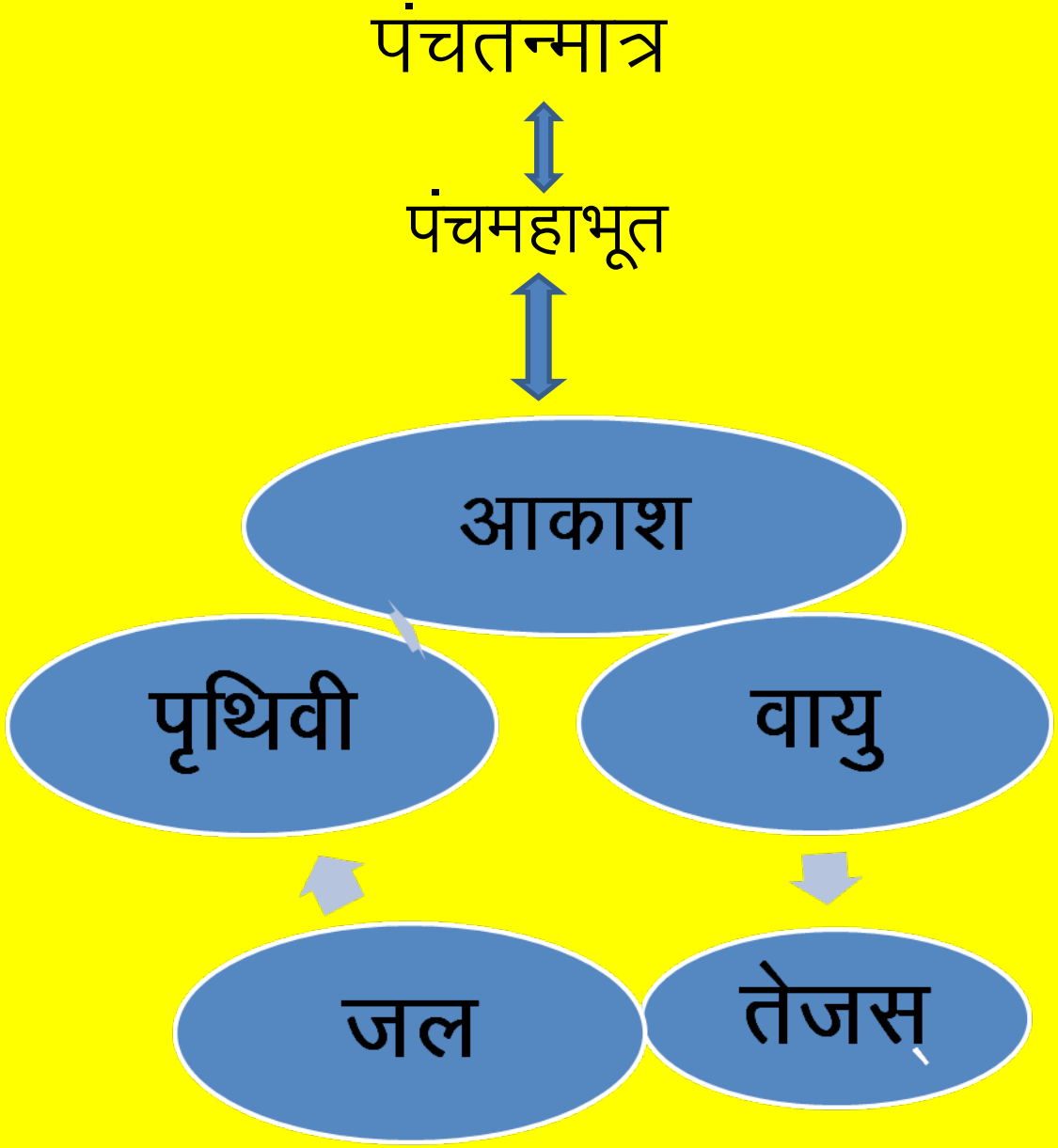
पंचतन्मात्र
पंचमहाभूत
आकाश
पृथिवी
वायु
जल
तेजस्

एकादश इन्द्रियगण

1. मनस्–उभयेन्द्रिय
2. ज्ञानेन्द्रिय–श्रोत्रत्वगाक्षिरसनघ्राण –5
3. कर्मेन्द्रिय–वाक्–पाणि–पाद–पायुपस्थ–5

मौलिक तत्त्वों की संख्या–2

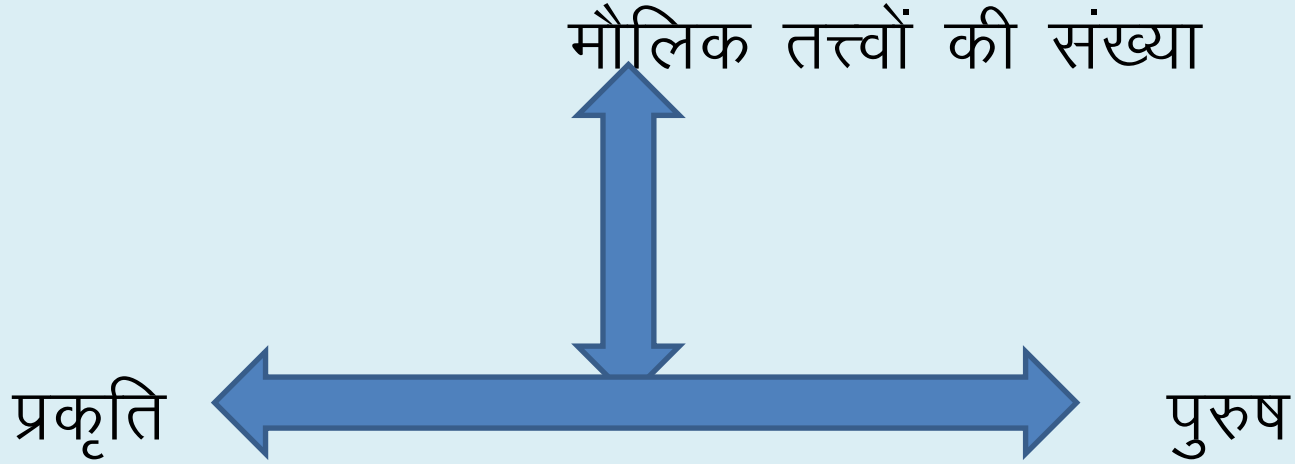

- प्रकृति से साक्षात् अथवा परम्परया 23 तत्त्वों की उत्पत्ति।
- प्रकृति का दूसरा नाम प्रधान तत्त्व है।
- प्रकृति जड़ अर्थात् अचेतन है।
- महत् से पृथिवी पर्यन्त 23 तत्त्व (कार्य) जड़ है।

- अतः कार्य–जड़ का कारण–प्रधान भी जड़ ही हो सकता है।
- प्रकृति त्रिगुण है क्योंकि इसके कार्य सुख–दुःख–मोह स्वभाव है।
- सत्त्व–रजस्–तमस्–तीन गुणों को द्रव्य कहा जाता है।
- तीन गुणों की साम्यावस्था प्रकृति है।
- त्रिगुणों की विषमावस्था में जगत् की सृष्टि होती है।

पुरुष

1. पुरुष अजन्मा एवम् अविनाशी है।
2. पुरुष से किसी तत्त्व की उत्पत्ति नहीं होती है।
3. पुरुष चेतन है।
4. प्रकृति से पृथिवी पर्यन्त 24 तत्त्वों का समुदाय भोग्य है।
5. समुदाय(संघात) भौग्य का भोक्ता पुरुष है।
6. पुरुष को भोग एवं अपवर्ग देने हेतु प्रकृति की प्रवृत्ति होति है।
7. अपवर्ग(मोक्ष) को प्राप्त पुरुष से प्रकृति निवृत्त हो जाती है।
8. पुरुष का बहुत्त्व है। पुरुष (आत्माा) जीव प्रति शरीर में भिन्न है।

महत् (बुद्धि) {अन्तःकरण, अध्यावसायवृत्ति}

1. प्रकृति (प्रधान) से बुद्धि साक्षात् उत्पन्न होती है।
2. कोई भी व्यवहार बुद्धि के विना नहीं हो सकता है।
3. बुद्धि से अहङ्कार की उत्पत्ति होती है।
4. बुद्धि से किये गये व्यवहार का अभिमान पुरुष में होता है।

5. सृष्टि में प्रकृति प्रवृत्त होती है। पुरुष के कार्यों को करने वाली (कर्त्री) बुद्धि है, पुरुष तो कर्मफल का भोक्ता है।

6. प्रकृति परिणामशील है पुरुष नहीं।

7. प्रकृति एवम् पुरुष में {विवेक–बुद्धि के अज्ञान से} संयोग होने से जगत् की सृष्टि में पुरुष जन्म–मरण के चक्र में उलझ जाता है।

8. विवेकख्याति होने से पुष्करलाशवत् निर्लेप पुरुष मुक्त हो जाता है।

अहङ्कार (अभिमान वृत्ति) अन्तःकरण

1. अहङ्कार से पाँच तन्मात्र उत्पन्न होते हैं।
2. अहङ्कार से मनस् (उभयेन्द्रिय) अन्तःकरण की उत्पत्ति होती है।
3. संकल्प नामक वृत्ति मनस् में होती है।
4. पाँच ज्ञानेन्द्रियों एवं पाँच कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति भी अहङ्कार से होती है।
5. केवल पञ्चतन्मात्र (शब्दतन्मात्र प्रभृति) से पञ्चमहाभूतों की उत्पत्ति होती है।
6. एकादश इन्द्रियों से किसी तत्त्व की उत्पत्ति नहीं होती है।
7. महाभूत स्थूल कार्य हैं उनके कारण पञ्चतन्मात्र सूक्ष्म होते हैं।

पञ्चतन्मात्र

पाँच तन्मात्र से पाँच महाभूत उत्पन्न होतें हैं।

इनके वाद के एकादश इन्द्रिय एवम् पाँच महाभूत कुल 16 तत्त्वों से कोई भी तत्त्व किसी तत्त्व को उत्पन्न नहीं करते हैं।

एकादश इन्द्रियगण

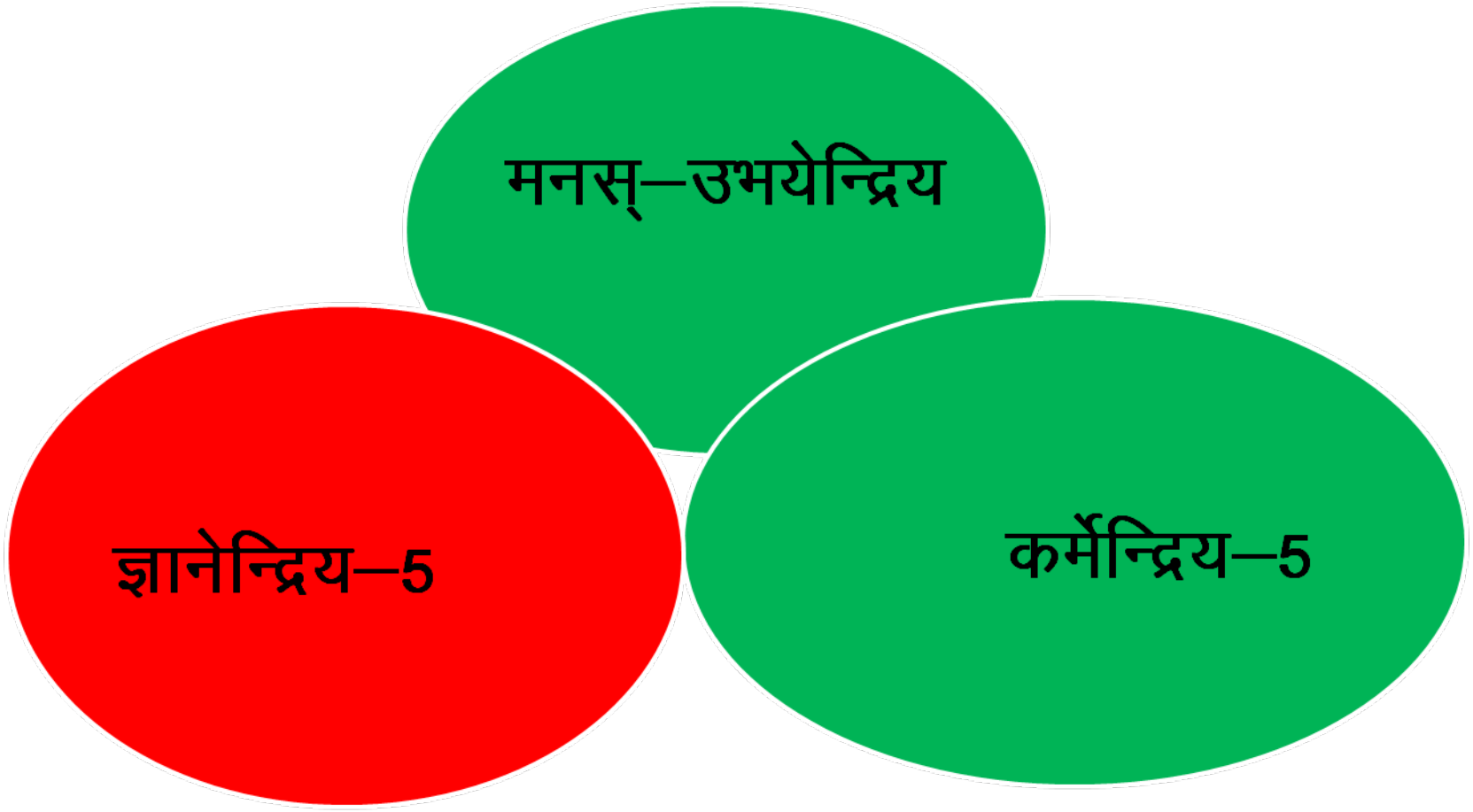

पञ्चमहाभूत

1. शब्दतन्मात्र सूक्ष्म है, इससे आकाश की उत्पत्ति होती है।
2. स्पर्शतन्मात्र से वायु तत्त्व की उत्पत्ति होती है।
3. रूपतन्मात्र से तेजस् की, रसतन्मात्र से जल की की उत्पत्ति होती है तथा गन्धतन्मात्र से पृथिवी तत्त्व की की उत्पत्ति होती है।
4. प्रलयकाल में भी जिसका स्वरूप सुरक्षित रहता है–उसे तत्त्व कहा जाता है।

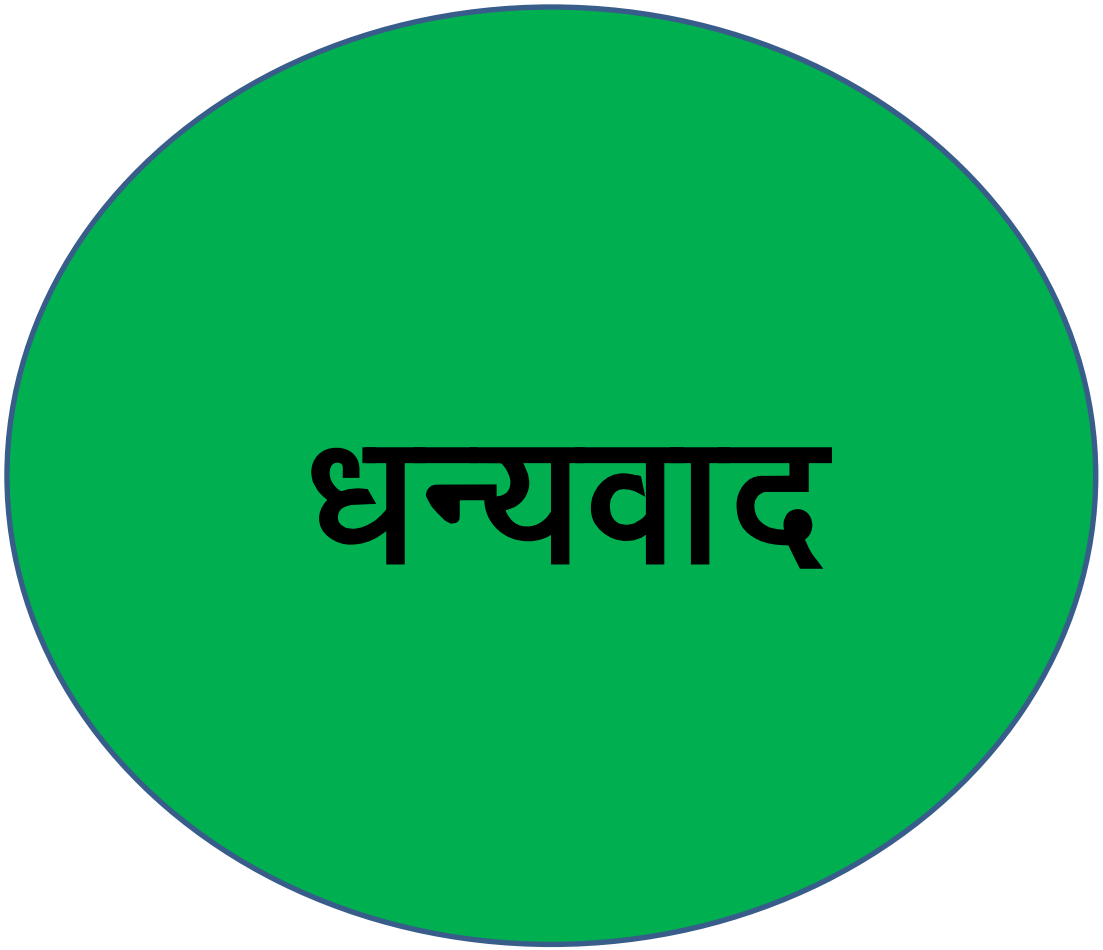
धन्यवाद